हिन्दी

MODEL PAPER 8

कक्षा-X

समय : 3 घंटे 15 मिनट

पूर्णांक : 80

खंड 'अ'

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 1 से 5)

उपासना की दृष्टि से कई लोग काफी बढ़े-चढ़े होते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि जहाँ दूसरे लोग भगवान को बिल्कुल ही भूल बैठे हैं, वहाँ वह व्यक्ति ईश्वर का स्मरण तो करता है, औरों से तो अच्छा है। इसी प्रकार जो बुराइयों से बचा है, अनीति और अव्यवस्था नहीं फैलाता, संयम और मर्यादा में रहता है, वह भी भला है। उसे बुद्धिमान कहा जाएगा, क्योंकि दुर्बुद्धि को अपनाने से जो अगणित विपत्तियाँ उस पर टूटने वाली थीं, उनसे बच गया। स्वयं भी उद्विग्न नहीं हुआ और दूसरों को भी विक्षुब्ध न करने की भलमनसाहत बरतता रहा। यह दोनों ही बातें अच्छी हैं। ईश्वर का नाम लेना और भलमनसाहत से रहना, एक अच्छे मनुष्य के लिये योग्य कार्य है। उतना तो हर समझदार आदमी को करना ही चाहिये था। जो उतना ही करता है, उसकी उतनी तो प्रशंसा की ही जाएगी कि उसने अनिवार्यकर्त्तव्यों की उपेक्षा नहीं की और दुष्ट-दुरात्माओं की होने वाली दुर्गति से अपने को बचा लिया।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है- [1]

(अ) उपासना (ब) ईश्वर आराधना

(स) बुद्धिमान मनुष्य (द) श्रेष्ठ मनुष्य

(2) एक समझदार आदमी को क्या नहीं करना चाहिए? [1]

(अ) अनीति और अव्यवस्था फैलाना

(ब) ईश्वर का नाम लेना

(स) भलमनसाहत से रहना

(द) संयम और मर्यादा में रहना

(3) ईश्वर का नाम लेना और भलमनसाहत से रहना, योग्य कार्य है- [1]

(अ) बुरे मनुष्य के लिए

(ब) अच्छे मनुष्य के लिए

(स) अच्छे-बुरे मनुष्य के लिए

(द) उपर्युक्त सभी

(4) बुराइयों से बचने वाला कहलाता है- [1]

(अ) बुद्धिमान (ब) समझदार

(स) औरों से अच्छा (द) उपर्युक्त सभी

(5) किस मनुष्य की प्रशंसा नहीं की जानी चाहिए? [1]

(अ) जिसने कर्तव्यों की उपेक्षा की

(ब) जो उपासना करता है।

(स) जो ईश्वर-स्मरण करता है।

(द) जो संयम से रहता है।

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 6 से 10)

शीश पर मंगल कलश रख
भूलकर जन के सभी दुःख
चाहते हो तो मना लो जन्म दिन भूखे वतन का।
जो उदासी है हृदय पर,
वह उभर आती समय पर,
पेट की रोटी जुड़ाओ,
रेशमी झंडा उड़ाओ,
ध्यान तो रखो मगर उस अधफटे नंगे बदन का।
तन कहीं पर, मन कहीं पर,
धन कहीं, निर्धन कहीं पर,
फूल की ऐसी विदाई,
शूल को आती रुलाई
आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का।
आग ठंडी हो, गरम हो,
तोड़ देती है, मरम को,
क्रांति है आनी किसी दिन,
आदमी घड़ियाँ रहा गिन,
राख कर देता सभी कुछ अधजला दीपक भवन का
मना लो जन्म- दिन भूखे वतन का।

(6) देश की स्वतंत्रता के मांगलिक उत्सव शोभाहीन होते हैं यदि- [1]

(अ) देश की जनता दुःखी और भूखी है।

(ब) राष्ट्र का जनसमुदाय निर्धन है।

(स) मुल्क के अधिकांश लोग परेशान हैं।

(द) पूरे राज्य का भविष्य अंधकारमय है।

(7) देश के शासकों को कवि का संबोधन है- [1]

(अ) भूखे को भोजन और नंगे को वस्त्र देने के लिए

(ब) लोगों की उदासी और कष्ट निवारण के लिए

(स) समय की गति और परिस्थितियों की विषमता समझने के लिए

(द) राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए

(8) 'आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का' कथन का आशय है- [1]

(अ) आँधियों के झटकों को झेलना उपवन की विवशता हो गई है।

(ब) देश की निरीह जनता कुशासन को सहने की अभ्यस्त हो गई है।

(स) देश की जनता दुःखों और आपदाओं से समझौता कर रही है।

(द) देश का जनसमुदाय कठिनाइयों और कष्टों को सह रहा है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(9) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है- [1]
(अ) शीश पर मंगल कलश
(ब) जन्मदिन भूखे वतन का
(स) क्रांति
(द) अधजला दीपक भवन

(10) 'अधजला दीपक भवन का' कथन का आशय है- [1]
(अ) क्रोधी व्यक्ति
(ब) निर्धन मनुष्य
(स) भूखा इंसान
(द) व्यथित प्राणी

(11) जार्ज पंचम की नाक के लिए हथियार बंद पहरेदार क्यों नियुक्त किए गए थे? [1]
(अ) जार्ज पंचम की नाक बहुत सुंदर थी।
(ब) कुछ लोग उसकी नाक तोड़ देना चाहते थे।
(स) वे जार्ज पंचम को इंग्लैंड भेजना चाहते थे।
(द) वे नाक को दोबारा बनवाना चाहते थे।

(12) गंतोक में सुबह आँख खुलते ही लेखिका बालकनी की ओर क्यों दौड़ी? [1]
(अ) माउंट एवरेस्ट देखने के लिए
(ब) कंचनजंगा देखने के लिए
(स) धौलागिरी देखने के लिए
(द) अमरनाथ की गुफा देखने के लिए

2. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. वे संज्ञा शब्द जो नाप-तोल वाले द्रव्य, पदार्थ या धातु का बोध कराते हैं, उन्हें .....कहते हैं। [1]
2. जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उसे ..... कहते हैं। [1]
3. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम शब्द के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव, दशा, स्वाद आदि का बोध कराते हैं तथा अन्य कई विशेषताएँ भी बताते हैं, वे .....कहे जाते हैं। [1]
4. जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ हो,उसे ..... कहते हैं। [1]
5. 'अत्युक्ति' शब्द में.....उपसर्ग है। [1]
6. 'सजावट' शब्द में.....प्रत्यय है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए।

1. विसर्ग संधि किसे कहते है? [1]
2. कर्मधारय समास की परिभाषा लिखिए। [1]
3. 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना' मुहावरे का अर्थ लिखिए। [1]
4. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग लिखिए। [1]
5. संगतकार किसे कहा गया है? [1]
6. कन्यादान कविता में लड़की के सयाने न होने का क्या आशय है? [1]
7. प्रसाद जी का जन्म कब और कहाँ हुआ? [1]
8. पहली बार कस्बे से गुजरने पर हालदार मूर्ति पर क्या देखकर चौंक गए? [1]
9. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म कब व कहाँ हुआ? [1]
10. संस्कृत-नाटकों में नारी पात्र किस भाषा में संवाद बोलती हैं? [1]
11. जितेन ने देवी-देवताओं के निवास वाली जगह का क्या नाम बताया? [1]
12. "रानी आए और नाक न हो" पंक्ति में किसकी नाक न होने की बात कही गयी है? [1]

खंड 'ब'

प्रश्न संख्या 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम उत्तर सीमा 45 शब्द हैं।

4. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं? [2]

5. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे? [2]

6. होली के दिन देश के दीवाने अपनी होली किस तरह मनाना चाहते थे? उनके इस कार्य में दुलारी ने किस तरह सहयोग किया? [2]

7. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते है? विस्मयादिबोधक कुछ शब्दों को लिखिए। [2]

8. 'नेताजी का चश्मा' पाठ के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है? [2]

9. भगत की मृत्यु उन्हीं के अनुरूप हुई, कैसे? स्पष्ट कीजिए। [2]

10. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों पर नमक-मिर्च छिड़का जिसे देखकर लेखक ललचाया पर उसने खीरे खाने का प्रस्ताव अस्वीकृत क्यों कर दिया? [2]

11. गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान क्यों बताया है? [2]

12. कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहा है? [2]

13. 'छाया मत छूना' कविता में 'जितना तू उतना ही भरमाया' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? [2]

14. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है? [2]

15. 'गिरिजाकुमार' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

16. 'स्वयंप्रकाश' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

खंड 'स'

17. निम्नलिखित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [1+2]

मैं नहीं जानता इस संन्यासी ने कभी सोचा था या नहीं कि उसकी मृत्यु पर कोई रोएगा। लेकिन उस क्षण रोने वालों की कमी नहीं थी। (नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है।) इस तरह हमारे बीच से वह चला गया जो हममें से सबसे अधिक छायादार फल-फूल गंध से भरा और सबसे अलग, सबका होकर, सबसे ऊँचाई पर, मानवीय करुणा की दिव्य चमक में लहलहाता खड़ा था। जिसकी स्मृति हम सबके मन में जो उनके निकट थे किसी यज्ञ की पवित्र आग की आँच की तरह आजीवन बनी रहेगी। मैं उस पवित्र ज्योति की याद में श्रद्धानत हूँ।

अथवा

और कुछ नहीं पूछ पाये हालदार साहब। कुछ पल चुपचाप खड़े रहे, फिर पान के पैसे चुकाकर जीप में आ बैठे और रवाना हो गए। बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुःखी हो गए। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे।

कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा, क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएंगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे।

18. निम्नलिखित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।[1+2]

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

अथवा

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।

19. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई? [3]

अथवा

'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा जो सीख दी गई हैं, वे वर्तमान परिस्थितियों में कितनी प्रासंगिक हैं, स्पष्ट कीजिए। [3]

20. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे? [3]

अथवा

कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया? [3]

खंड 'द'

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300-350 शब्दों में एक सारगर्भित निबंध लिखिए। [4]

(अ) मेरा भारत महान

(1) प्रस्तावना
(2) भारत के नाम
(3) भारत की महान संस्कृति
(4) विविधता में एकता

अथवा

(ब) इंटरनेट

(1) इंटरनेट का उपयोग
(2) इंटरनेट के लाभ
(3) इंटरनेट से हानियाँ
(4) इंटरनेट का महत्व

अथवा

(स) दशहरा

(1) प्रस्तावना
(2) दशहरे से संबंधित पौराणिक कथाएँ
(3) दशहरा त्योहार मनाने का तरीका
(4) दशहरा त्योहार का महत्व

अथवा

(द) एक ऐतिहासिक स्थान की यात्रा

(1) प्रस्तावना
(2) सीकरी का बुलंद दरवाजा
(3) फतेहपुर सीकरी के महल
(4) दीवाने खास और हिरन मीनार

22. ग्रीष्मकालीन अवकाश पर अपने घर आने का निमंत्रण देते हुए अपनी सहेली को एक पत्र लिखिए। [4]

अथवा

दिल्ली में नौकरी करने गई अपनी बड़ी बहन को घर परिवार के समाचारों से अवगत कराने हेतु पत्र लिखिए। [4]

23. आपके शहर में उद्योग निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय हैण्डलूम उत्पादों का प्रदर्शन-विक्रय मेला आयोजित किया जा रहा है। एक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

अथवा

स्वास्थ्य विभाग के कुष्ठ उन्मूलन अभियान की ओर से कुष्ठ रोग के उपचार हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

उत्तरमाला मॉडल पेपर - 08

खंड 'अ'

1.

(1) (द) श्रेष्ठ मनुष्य
(2) (अ) अनीति और अव्यवस्था फैलाना
(3) (ब) अच्छे मनुष्य के लिए
(4) (द) उपर्युक्त सभी
(5) (अ) जिसने कर्तव्यों की उपेक्षा की
(6) (अ) देश की जनता दुःखी और भूखी है।
(7) (ब) लोगों की उदासी और कष्ट निवारण के लिए
(8) (स) देश की जनता दुःखों और आपदाओं से समझौता कर रही है।
(9) (ब) जन्मदिन भूखे वतन का
(10) (द) व्यथित प्राणी
(11) (ब) कुछ लोग उसकी नाक तोड़ देना चाहते थे।
(12) (ब) कंचनजंगा देखने के लिए

2. (1) द्रव्यवाचक संज्ञा (2) सर्वनाम (3) गुणवाचक विशेषण (4) सामान्य क्रिया (5) अति (6) आवट

3.

1. विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।
2. जिस समस्तपद के खण्ड विशेष्य-विशेषण अथवा उपमान उपमेय होते हैं, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
3. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना:- अपनी प्रशंसा आप करना।
4. वाक्य- जब नई बहू से रोटी बेलने को बोला तब वह इंकार करके बोली मेरे हाथ में दर्द है, सास बोली नाच न जाने आंगन टेढ़ा।
5. संगतकार मुख्य गायक का साथ देने वाले को कहा जाता है।
6. कन्यादान कविता में लड़की के सयाने न होने का आशय दुनियादारी को न समझना।
7. प्रसाद जी का जन्म सन् 1889 में काशी में हुआ।
8. पहली बार कस्बे से गुजरने पर हालदार मूर्ति पर चश्मा देखकर चौंक गए।
9. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म सन् 1927 में ज़िला बस्ती, उत्तर प्रदेश में हुआ।
10. संस्कृत-नाटकों में नारी पात्र प्राकृत भाषा में संवाद बोलती हैं।
11. जितेन ने देवी-देवताओं के निवास वाली जगह का नाम खेदुम बताया।
12. "रानी आए और नाक न हो" पंक्ति में जॉर्ज पंचम की नाक न होने की बात कही गयी है।

खंड 'ब'

4. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को निम्न प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं-

1. शिशु की जिद में भी प्रेम का प्रकटीकरण करते है।
2. शिशु और माता-पिता के सानिध्य में यह स्पष्ट करना कठिन होता है कि माता-पिता का स्नेह शिशु के प्रति है या शिशु का माता-पिता के प्रति दोनों एक ही प्रेम के सम्पूरक होते हैं।
3. शिशु की मुस्कुराहट, शिशु को उनकी गोद में जाने की ललक उनके साथ विविध क्रीडाएँ करके अपने प्रेम का प्रकटीकरण करते हैं।

5. बाहरी दबाव सभी प्रकार के कलाकारों को प्रेरित करते हैं। उदाहरणतया अधिकतर अभिनेता, गायक, नर्तक, कलाकार अपने दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं की माँग पर कला-प्रदर्शन करते हैं। अमिताभ बच्चन को बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक अभिनय करने का आग्रह न करें तो शायद अब वे आराम करना चाहें। इसी प्रकार लता मंगेशकर भी 50 साल से गाते-गाते थक चुकी होंगी, अब फिल्म-निर्माता, संगीतकार और प्रशंसक ही उन्हें गाने के लिए बाध्य करते होंगे।

6. होली के दिन देश के दीवाने अपनी होली कुछ अलग ढंग से ही मनाना चाह रहे थे। इस दिन वे सवेरे से ही जुलूस निकालकर जलाने के लिए विदेशी वस्त्रों का संग्रह करते फिर रहे थे। वे दल बनाकर घूमते हुए 'भारत जननी तेरी जय, तेरी जय हो' का गायन करते हुए लोगों को उत्साहित कर रहे थे और लोग अपने कुरते, कमीज, टोपी, धोती आदि दे रहे थे। दुलारी ने भी देश के दीवानों की पुकार सुनकर खिड़की खोली और मैनचेस्टर तथा लंकाशायर के मिलों की बनी साड़ियों का नया बंडल फेंककर अपना योगदान दिया।

7. जिन अव्यय शब्दों के द्वारा हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, भय, ग्लानि, प्रशंसा, क्रोध आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते। हैं।
'हाय', 'अरे' और 'वाह' विस्मयादिबोधक अव्यय है।

8. 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ के माध्यम से लेखक ने देशवासियों विशेषकर युवा पीढ़ी को राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की भावना मजबूत बनाए रखने के साथ-साथ शहीदों का सम्मान करने का भी संदेश दिया है। देशभक्ति का प्रदर्शन देश के सभी नागरिक अपने-अपने ढंग से कार्य-व्यवहार से कर सकते हैं।

9. जिस तरह के टेक और नेम-व्रत वाली भगत की दिनचर्या थी, उसी प्रकार उनकी मृत्यु हुई। वे अपने गायन के माध्यम से अपने साहब की निकटता पाना चाहते थे। ऐसा उन्होंने मृत्यु से पूर्ण सायंकाल तक गीत गाकर किया। इसके अलावा वे जीवन में दोनों समय स्नान-ध्यान करते थे। इसे उन्होंने आमरण निभाया। इस तरह हम कह सकते हैं कि भगत की मृत्यु उन्हीं के अनुरूप हुई।

10. नवाब साहब ने करीने से सजी खीरे की फाँकों पर नमक-मिर्च छिड़ककर लेखक से खाने के लिए आग्रह किया तो लेखक ने साफ़ मना कर दिया। जबकि लेखक खीरे खाना चाहता था। इसका कारण यह था कि लेखक पहली बार नवाब साहब को खीरा खाने के लिए मना कर चुका था।

11. गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

12. कवि देव ने 'श्रीब्रजदूलह' श्री कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है। कवि उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार एक दीपक मंदिर में प्रकाश एवं पवित्रता का सूचक है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी इस संसार-रूपी मंदिर में ईश्वरीय आभा का

प्रकाश एवं पवित्रता का संचार करते हैं। उन्हीं से यह संसार प्रकाशित है।

13. 'छाया मत छूना' कविता में 'जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि माना वर्तमान समय में मनुष्य के जीवन में न यश है और न वैभव, न मान-सम्मान है और न धन-संपदा, किंतु मनुष्य इन चीजों को पाने के लिए जितना दौड़ता है, वह उतना ही भटकता है।

14. गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेगिस्तान में दूर सूर्य की किरणों द्वारा उत्पन्न चमक से पानी होने का अहसास परन्तु वहाँ पर कुछ नहीं होता। इस भ्रम की स्थिति को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इसका प्रयोग कविता में बड़प्पन के एहसास के अर्थ में हुआ है।

15. कवि गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1918 में गुना, मध्य प्रदेश में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा झाँसी, उत्तर प्रदेश से ग्रहण कर एम.ए. अंग्रेजी एवं एल.एल.बी की उपाधि लखनऊ से प्राप्त की। 'नयी कविता' के कवि गिरिजाकुमार माथुर रोमानी मिज़ाज के कवि माने जाते हैं।

विषय की मौलिकता को ध्यान में रखते हुए शिल्प की कला को वातावरण के माध्यम से रंग भरते थे। उनकी काव्य-कृतियाँ नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले (काव्यसंग्रह), जन्मकैद (नाटक), 'नयी कविता: सीमाएँ और संभावनाएँ' (आलोचना) इत्यादि। साहित्य सृजन करते हुए उनका देहान्त सन् 1994 में हुआ।

16. कहानीकार स्वयंप्रकाश का जन्म सन् 1947 में इन्दौर (म. प्र.) में हुआ। उन्होंने मेकेनिकल इन्जीनियरिंग में शिक्षा प्राप्त की।

आठवें दशक से लेकर वर्तमान तक के कहानीकारों में स्वयंप्रकाश को अग्रणी माना जाता है। इनके तेरह कहानी संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें 'सूरज कब निकलेगा', 'आएँगे अच्छे दिन भी', 'आदमी जात का आदमी' और 'संधान' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा 'बीच में विनय' और 'ईंधन' उनके चर्चित उपन्यास हैं। उन्हें अब तक पहल सम्मान, बनमाली पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

खंड 'स'

17. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित संस्मरण 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' से लिया गया है।

प्रसंग- इस में लेखक फादर की मृत्यु पश्चात् उनके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।

व्याख्या- लेखक बताते है कि मैं नहीं जानता कि फादर ने (संन्यासी) सोचा भी होगा कि कोई उनकी मृत्यु पर अश्रु भी बहायेगा क्या? लेकिन उनकी मृत्यु पर इकट्ठे हुए लोगों को देखकर लेखक बताते है कि उस क्षण (मृत्यु) रोने वालों की कमी नहीं थी। साथ ही लेखक ये भी कहते है कि उस समय इकट्ठे हुए लोगों की नम आँखों को गिनना अर्थात् सबके नाम लिखना स्याही फैलाना अर्थात् पन्ने भरने जैसा होगा।

फादर के बारे में लेखक कहते है कि यह व्यक्ति हम सभी में से सबसे अधिक छायादार, फल-फूल सहित और खुशबू से भरे हुए वृक्ष के समान सबसे अलग व्यक्तित्व वाला लेकिन सबको अपना बनाकर, सबसे अच्छा व्यवहार करके ऊँचाई पर खड़ा होने वाला, मानवीयता की दिव्य ज्योति में सबकी स्मृतियों में लहलहाता खड़ा रहेगा। फादर बुल्के की याद हम सबके मन में तथा वे जिनके ज्यादा निकट थे उनके मन में तो यज्ञ की पवित्र ज्योति की भाँति आजीवन प्रज्ज्वलित रहेंगे। लेखक कहते है कि मैं उस पवित्र आत्मा की स्मृति में सदैव श्रद्धा से झुका रहूँगा अर्थात् सदैव नतमस्तक रहूँगा।

विशेष-

(i) लेखक फादर बुल्के की याद को जीवन-भर सहेज कर रखते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

(ii) भाषा-शैली सरल-सहज व भावपूर्ण है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखक स्वयंप्रकाश द्वारा लिखित कहानी 'नेताजी का चश्मा' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें हालदार साहब को पता चलता है कि कैप्टन की मृत्यु हो गई है और इस कारण मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं है जिससे वे अत्यन्त दु:खी होते हैं।

व्याख्या- हालदार साहब ने कस्बे से गुजरते हुए देखा कि नेताजी की मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं है तो उन्होंने पान वाले से पूछा, पान वाले ने बताया कि कैप्टन की मृत्यु हो गई है इसलिए मूर्ति पर अब कोई चश्मा नहीं है। यह सुन हालदार साहब बार-बार एक ही बात सोचने लगे कि इस देश के लोगों का क्या होगा जो उन स्वतंत्रता सेनानियों पर हँसते हैं जिन्होंने अपने देश के लिए घर-गृहस्थी, जवानी-जिन्दगी, सब कुछ बलिदान कर दिया और जो स्वयं को बेचने के लिए अर्थात् अपने मूल्यों को, देशप्रेम, स्वाभिमान को किसी भी कीमत पर दूसरों को बेचने के लिए तैयार हैं।

आज कैप्टन के न रहने पर किसी और के मन में देशभक्ति की भावना नहीं है, इसी कारण नेताजी की मूर्ति आज बिना चश्मे के है। हालदार साहब सब सोचकर दु:खी हो गये। पन्द्रह दिनों बाद फिर उसी कस्बे से उनका गुजरना हुआ लेकिन उन्होंने तय कर लिया था कि कस्बे में नेताजी की मूर्ति अवश्य लगी होगी लेकिन सुभाषचन्द्र की आँखों पर चश्मा नहीं होगा, क्योंकि मूर्तिकार मास्टर चश्मा बनाना भूल गया और देशभक्त कैप्टन की मृत्यु हो गई, इसलिए वे अब उस चौराहे पर रूकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएंगे और ना ही मूर्ति की तरफ देखेंगे, सीधे निकल जाएंगे।

विशेष-

(i) हालदार साहब के विचारों द्वारा देश की तरफ लोगों की सोच एवं उत्तरदायित्व पर प्रकाश डाला गया है।

(ii) भाषा सरल-सहज व प्रवाहमय है। भाषा भावों की अभिव्यक्ति देने में पूर्ण सक्षम है।

18. **संदर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक "क्षितिज भाग-2" में संकलित कविता "छाया मत छूना" से लिया गया है। इसके रचयिता "श्री गिरिजाकुमार माथुर जी" हैं।

प्रसंग- यह कविता अतीत की स्मृतियों को भूल वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती है। इस पद्यांश में कवि ने स्पष्ट किया है कि हमें बीते हुए सुख को याद करके अपने वर्तमान के दु:ख को अधिक गहरा नहीं करना चाहिए।

व्याख्या- कई बार ऐसा होता है कि हिम्मत होने के बावजूद आदमी दुविधा में पड़ जाता है और उसे सही रास्ता नहीं दिखता। कई बार

आपका शरीर तो स्वस्थ रहता है लेकिन मन के अंदर हजारों दु:ख भरे होते हैं। कई लोग छोटी या बड़ी बातों पर दुखी हो जाते हैं। जैसे कि सर्दियों की रात में चाँद नहीं दिखने पर। यह उसी तरह है जैसे कि पास तो हो गए लेकिन 90% मार्क्स नहीं आए। कई बार लोग उचित समय पर कुछ प्राप्त न कर पाने की वजह से दुखी रहते हैं। लेकिन जो न मिले उसे भूल जाना ही बेहतर होता है। भूतकाल को छोड़कर हमें अपने वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए और एक सुनहरे भविष्य के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए।

विशेष-

(i) कवि ने आज को प्रसन्नता से व्यतीत करने का संदेश दिया है। पिछली यादों की कड़वाहट से वर्तमान के सुख खट्टे नहीं करने को कहा है।

(ii) छन्द की दृष्टि से मुक्त छन्द है। खड़ी बोली हिन्दी है, 'होगा दुख दूना' में अनुप्रास अलंकार है। 'चन्द्र' चाँद का तत्सम रूप है।

(iii) श्रृंगारिक भावना से पूर्ण पद सहज एवं सरल है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'राम-लक्ष्मण - परशुराम' संवाद से लिया गया है।

प्रसंग- इस पद में परशुराम के स्वभाव को जानकर लक्ष्मण ने जो कुछ कहा, उसका वर्णन है।

व्याख्या- लक्ष्मण हँसते हुए मधुर वाणी में बोले-अहो मुनिश्रेष्ठ! आप स्वयं को महान योद्धा मानते हो। इसलिए आप बार- बार मुझे अपना फरसा दिखा रहे हो। आप तो फूँक से ही पहाड़ को उड़ा देना चाहते हो। हे मुनि! हम भी कोई छुईमुई के पौधे के समान कमजोर नहीं हैं जो आपकी तर्जनी अँगुली देखकर डर जाएँगे। मैंने आपके हाथ में फरसा और कन्धे पर धनुष बाण देखकर ही कुछ अभिमानपूर्वक कहा है।

विशेष-

(i) शैली व्यंग्यपूर्ण और उपहासपूर्ण है।

(ii) वीर तथा रौद्र रस की सफल व्यंजना हुई है।

19. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

- वीर योद्धा स्वयं अपनी वीरता का बखान नहीं करते अपितु दूसरे लोग उसकी वीरता का बखान करते हैं।
- वे युद्धभूमि में अपनी वीरता का परिचय साहसपूर्वक देते हैं।
- वीर योद्धा शांत, विनम्र, क्षमाशील, धैर्यवान, बुद्धिमान होते हैं।
- वे खुद पर अभिमान नहीं करते हैं।
- वह दूसरों को आदर देते हैं।

अथवा

'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा बेटी को जो सीख दी गई है वह उसके अनुभव की उपज है। माँ को दुनियादारी और ससुराल वालों द्वारा किए गए व्यवहार का अनुभव है। उन्हें ध्यान में रखकर भावी जीवन के लिए सीख देती है। आज जब समाज में छल-कपट, शोषण, दहेज प्रथा आदि बुराइयाँ बढ़ी हैं तथा ससुराल में अधिक सजग रहने की जरूरत बढ़ गई है तब माँ द्वारा बेटी को दी गई सीख की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

20. बालगोबिन भगत बेटा-पतोहू से युक्त परिवार, खेतीबारी और साफ़-सुथरा मकान रखने वाले गृहस्थ थे, फिर भी उनका आचरण साधुओं जैसा था। वह सदैव खरी-खरी बातें कहते थे। वे झूठ नहीं बोलते थे। वे किसी की वस्तु को बिना पूछे प्रयोग नहीं करते थे। वे खामखाह किसी से झगड़ा नहीं करते थे। वे अत्यंत साधारण वेशभूषा में रहते थे। वे अपनी उपज को कबीरपंथी मठ पर चढ़ावा के रूप में दे देते थे। वहाँ से जो कुछ प्रसाद रूप में मिलता था उसी में परिवार का निर्वाह करते थे।

अथवा

द्विवेदी जी ने पुरातन पंथियों को निम्नलिखित तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया है-

- नाटकों में कुलीन स्त्रियों को उनके प्राकृत भाषा बोलने पर अपढ़ होने का सबूत नहीं माना जा सकता है।
- कुछ शिक्षित लोग ही संस्कृत बोलते थे, शेष अन्य लोग प्राकृत ही बोलते थे।
- महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेश प्राकृत में दिए तथा जैन-बौद्ध साहित्य प्राकृत में ही लिखा गया है।
- यद्यपि शिक्षा के पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। हो सकता है कि वे कहीं खो गए हों।
- भारत में वेद-मंत्रों की रचना में स्त्रियों का योगदान रहा है, जो उनके शिक्षित होने का प्रमाण है।
- रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण को पत्र लिखने से यह सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में भी स्त्रियों के पढ़ने-लिखने का चलन था।

खंड 'द'

21.

(अ) **मेरा भारत महान**

(1) प्रस्तावना- भारत मेरी मातृभूमि है। इसके अन्न, जल और मिट्टी से मेरे शरीर का भरण-पोषण हुआ है। इसलिए यह देश मुझे प्राणों से भी प्यारा है। यह प्रकृति का लाड़ला देश है। पर्वतराज हिमालय इसके उत्तर में मुकुट की तरह सुशोभित है। दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरण धो रहा है। इसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर हैं। गंगा और यमुना जैसी नदियाँ इसके हृदय पर हार की तरह शोभा देती हैं। सुंदर कश्मीर हमारे देश का स्वर्ग है।

(2) भारत के नाम- भारत हमारी मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि है। भारत ने ही हमारा पालन-पोषण किया है तथा इसके तीर्थ हमारी आस्था और श्रद्धा के स्थल हैं। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि में स्थापित धर्म भारतीय-धर्म है। प्राचीन काल में यह देश जम्बू द्वीप कहलाता था। सात महान नदियों के कारण इसे सप्तसिन्धु कहा गया था। श्रेष्ठ जन का वास होने के कारण इसका आर्यावर्त नाम पड़ा। परम भागवत ऋषभदेव के पुत्र भरत के सम्बन्ध से भरतखंड और भारत नाम बन गया। भारत के गीत देवता भी गाते थे। विष्णु पुराण के अनुसार स्वर्ग में देवत्व भोगने के बाद देवता मोक्ष-प्राप्ति के लिए भारत में ही मनुष्य रूप में जन्म लिए थे ऐसा मानना था।

(3) भारत की महान संस्कृति- संसार को आचार, विचार, व्यापार-व्यवहार और ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा-दीक्षा भारत से ही मिली है। क्षमा, करुणा और उदारता की त्रिवेणी सबसे पहले इसी देश में बही है। संयम, त्याग, अहिंसा और विश्वबंधुत्व भारतीय

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

जीवन के आदर्श रहे हैं। सभ्यता का सूर्योदय सबसे पहले इसी देश में हुआ था। विविध कलाएँ यहीं जन्मीं और फली-फूलीं। कृषि विज्ञान, धातु-विज्ञान, औषधि विज्ञान आदि का यहाँ अच्छा विकास हुआ। अजंता और एलोरा की गुफाएँ, दक्षिण भारत के अनोखे मंदिर, आगरे का ताजमहल, दिल्ली का कुतुबमीनार, साँची का स्तूप आदि कला के उत्तम नमूने इसी देश में हैं। दुनियाभर में हजारों लाखों पर्यटक इन्हें देखने के लिए हर साल भारत आते हैं।

एक समय था जब सभी देशों ने भारत को सोने की चिड़िया या स्वर्ण भूमि कहकर इसकी प्रशंसा की है। भारत मानवीय गुणों की प्रेरणा और शिक्षा का एकमात्र केन्द्र है। भारत महामानव-समुद्र कहा जाता था क्यूंकि भारत में जो आता, वह इसका हो जाता। भारत का हिमालय हमारा भाव-प्रतीक है, तो गंगा हमारी माँ है। यहाँ प्रकृति मनोहरता और सौंदर्य अलसा कर बिखर गया है। यह प्रकृति का लाडला देश है।

वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास, कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे अजर-अमर कीर्तिवाले महाकवि भारत में ही पैदा हुए हैं। भारत में रचे गए वेद संसार के आदि ग्रंथ माने जाते हैं। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारत के ही नहीं, विश्व के गौरव हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, गीता के गायक श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, करुणानिधि गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, हर्ष, चंद्रगुप्त, शंकराचार्य, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने अपने अद्भुत कर्मों से इस देश को महान बनाया। कबीर, नानक, नरसी मेहता, मीराबाई तुकाराम, ज्ञानदेव, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस आदि संतों ने यहाँ भक्ति और ज्ञान की दिव्य सरिताएँ बहाई हैं।

(4) विविधता में एकता- हमारा देश कभी सांप्रदायिक या संकुचित मनोवृत्ति का नहीं रहा। इसीलिए इस देश में अनेक धर्म पनपे हैं। यहाँ के जनजीवन में विविधता के बावजूद एकता रही है। यह इस देश की महानता का एक विशिष्ट पहलू है।

सदियों तक पराधीन रहने के बावजूद हमारे देश की आत्मा को कोई विदेशी शक्ति कभी नहीं जीत पाई। आज सारा संसार स्वतंत्र भारत की महानता को स्वीकार करता है।

अथवा

(ब) इंटरनेट

(1) इंटरनेट का उपयोग- आजकल इंटरनेट हमारे जीवन का एक बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसने हमारे व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित किया है। विविध सोशल नेटवर्किंग साइटों ने हमें अपने मित्रों और संबंधियों से जोड़ दिया है। हम लोग तस्वीरों और संवादों की अविलंब साझेदारी कर सकते हैं। हम लोग विश्व के किसी भाग से उनसे बातें कर सकते हैं।

इंटरनेट ने व्यापार को भी उन्नत किया है। उत्पादों का विज्ञापन बहुत आसान हो गया है। ऑनलाइन खरीदारी, ऑनलाइन भुगतान, टिकटों की बुकिंग, ऑनलाइन बैंकिंग आदि सूचना-प्रौद्योगिकी के ही परिणाम हैं। विश्व के किसी भी भाग में ई-मेल भेजना सेकेंडों की बात रह गई है। वेब कॉन्फ्रेंसिंग, विडियो चैटिंग, ऑनलाइन सेमिनार आदि ने व्यापार को नई ऊँचाइयाँ दी हैं।

किसी सूचना तक पहुँचना अपेक्षाकृत आसान हो गया है। इंटरनेट से छात्र बहुत लाभ उठाते हैं। वे अपने अध्ययन की सामग्रियाँ ऑनलाइन प्राप्त करते हैं। वे अपने अध्ययन-कक्ष में ही विश्व-प्रसिद्ध पुस्तकालयों की पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

(2) इंटरनेट के लाभ- इंटरनेट के कई लाभ होते है। इंटरनेट की सहायता से हम किसी भी प्रकार की जानकारी और किसी भी सवाल का हल एक पल में प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट एक वर्ल्ड वाइड वेब है जिसकी सहायता से हम दुनिया के किसी भी कोने में अपनी मेल या जरूरी दस्तावेजों को पलक झपकते ही भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट मनोरंजन का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत, गेम्स, फिल्म आदि को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के डाउनलोड कर सकते हैं और आनंद उठा सकते हैं।

इंटरनेट की सहायता से बिजली, पानी और टेलीफोन के बिल का भुगतान घर बैठे कर सकते है। इंटरनेट से हमें घर बैठे रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन पढ़ाई, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी, खोज आदि सुविधाएँ मिल जाती हैं। इंटरनेट के माध्यम से आप यू-ट्यूब पर लाइव देखकर कुछ भी सीख सकते हैं। इंटरनेट सेवा के माध्यम से अब ई कॉमर्स और ई बाजार के बढ़ते चलन ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को मिटा दिया है।

(3) इंटरनेट से हानियाँ- जहाँ लाभ होता है वहाँ हानियाँ भी देखने को मिलती है। इंटरनेट पर अधिक सुविधा की वजह से व्यक्तिगत जानकारी की चोरी बढ़ गई है, जैसे- क्रेडिट कार्ड नंबर, बैंक कार्ड नंबर आदि। आज के समय में इंटरनेट का प्रयोग जासूसों के द्वारा देश की सुरक्षा व्यवस्था को भेदने के लिए किया जाने लगा है जो कि सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक है।

इंटरनेट से रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी की खोज आदि सुविधाएँ घर बैठे ही मिल जाती हैं लेकिन इससे पर्सनल जानकारी जैसे आपका नाम, पता और फोन नंबर का गलत उपयोग होने का खतरा भी बना रहता है। आज के समय में गोपनीय दस्तावेजों की चोरी भी होने लगी है।

इंटरनेट पर बहुत ज्यादा निर्भरता हमारे मस्तिष्क को सुस्त बना देता है। हम लोग आलसी हो जाते हैं। इंटरनेट और कंप्यूटरों पर बहुत ज्यादा समय व्यतीत करना विविध स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ावा दे सकता है। ऑनलाइन व्यापार ने पारंपरिक व्यापार को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। इन सभी मुद्दों पर विचार किए जाने की जरूरत है।

(4) इंटरनेट का महत्व- इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के किसी भी कोने से किसी भी कोने तक पल भर में भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम ई-मेल आसानी से भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम अपने विचारों और वस्तुओं का पूरी दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। यह विज्ञापन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है।

इसके बावजूद,हमलोग इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि इंटरनेट ने हम लोगों के जीवन को काफी बदल दिया है। यदि हम इंटरनेट की शक्ति का सकारात्मक तरीके से उपयोग करें तो हम

सभी क्षेत्रों में अद्भुत परिणाम पा सकते हैं। इंटरनेट हम सभी के जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। इससे हमें फायदे और नुकसान दोनों ही प्राप्त होते हैं। हमें सदैव इसका लाभ उठाना चाहिए जिससे हमें इससे फायदा हो सके। इसके कुछ नुकसान भी होते हैं इसलिए हमें इसके नुकसानों से दूर भी रहना चाहिए। जब इंटरनेट हमारी सहायता करता है तो हमें भी इसका नुकसान नहीं करना चाहिए। आज मानव की सफलता के पीछे इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है।

अथवा

(स) दशहरा

(1) प्रस्तावना- हमारा देश एक त्योहारों का देश है। दशहरा हमारा एक गौरवपूर्ण त्योहार है। यह आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। शरद ऋतु के स्वच्छ और मोहक वातावरण में यह त्योहार भारत के जनजीवन को आनंद और उत्साह से भर देता है।

(2) दशहरे से संबंधित पौराणिक कथाएँ- पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन श्रीराम ने लंका के राजा रावण पर विजय प्राप्त की थी। इस विजय की खुशी सारे देश में मनाई गई थी। इसी दिन की स्मृति में विजयादशमी या दशहरे का त्योहार मनाया जाता है। यह भी मान्यता है कि पांडवों के अज्ञातवास के दौरान इसी दिन अर्जुन ने शमी वृक्ष पर रखा अपना गांडीव धनुष उतारकर दुर्योधन की सेना को भगाया था और राजा विराट की अपहृत गायों को छुड़ाया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन राजा रघु ने देवराज इंद्र पर विजय पाकर उससे ढेर सारी सुवर्ण मुद्राएँ प्राप्त की थीं और उन्हें दान कर दिया था।

(3) दशहरा त्योहार मनाने का तरीका- मंगल कार्यों का प्रारंभ करने के लिए दशहरे का दिन बहुत शुभ माना जाता है। इस दिन लोग अपने घरों और दुकानों के दरवाजों को तोरणों से सजाते हैं। इस दिन क्षत्रिय अपने घोड़ों को सजाते हैं और शस्त्रों की पूजा करते हैं। लोग अपने औजारों और कल-कारखानों की पूजा करते हैं। किसानों के जीवन में दशहरा नए रंग भर देता है। दशहरे के बाद ही वे रबी की फसल बोने की तैयारी करते हैं। दशहरे के पूर्व नौ दिनों तक सारे देश में रामलीला का आयोजन किया जाता है। दशहरे के दिन रामलीला समाप्त होती है और कागज तथा बाँस से बनाए और बारूद भरे हुए मेघनाद, कुंभकर्ण और रावण के पुतले जलाए जाते हैं। इस प्रकार दशहरा बुराई पर भलाई की तथा अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। इसीलिए इस त्योहार को 'विजयादशमी' कहते हैं।

(4) दशहरा त्योहार का महत्व- आजकल लोग दशहरे के महत्व को भूलकर बाह्य आडंबर को ही प्रधानता देने लगे हैं। इस दिन कुछ लोग शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं। दशहरे जैसे पवित्र पर्व को सुंदर ढंग से मनाना चाहिए। अपने हृदय को स्वधर्म, स्वदेशप्रेम, बलिदान, तपस्या, दान और वीरता जैसे उत्तम भावों से भर देना ही इस त्योहार को मनाने का सही तरीका है। कहते हैं कि इसी दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था और लंका पर विजय पाई थी। इसलिए दशहरे के दिन रावण के पुतले जलाए जाते हैं।

सचमुच, विजयादशमी हमारा राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है। दशहरे का त्योहार हमें धर्म, न्याय और मानवता की रक्षा करने तथा हर शुभ कार्य में विजयी बनने का संदेश देता है। लोग दशहरे को बहुत शुभ दिन मानते हैं। मुझे दशहरा का त्योहार बहुत पसंद है।

अथवा

(द) एक ऐतिहासिक स्थान की यात्रा

(1) प्रस्तावना- भारत का इतिहास गौरवपूर्ण है। यहाँ के अनेक ऐतिहासिक स्थान इसके साक्षी हैं। ऐतिहासिक स्थानों की सुंदरता और महत्ता का परिचय उन्हें देखकर ही मिल सकता है। हमने इतिहास में फतेहपुर सीकरी के बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था। हमारे मन में यह ऐतिहासिक स्थान देखने की उत्सुकता जाग उठी और गर्मी की छुट्टियों में हम वहाँ जाने के लिए निकल पड़े।

(2) सीकरी का बुलंद दरवाजा- सीकरी का बुलंद दरवाजा बहुत ऊँचा है। इसकी रचना इतनी सुंदर है कि देखते ही मुँह से 'वाह', 'वाह' के शब्द अपने आप निकल पड़ते हैं। इसके समीप एक बहुत ही रमणीय सरोवर है। दरवाजे से लगा हुआ शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है। कहते हैं, उस फकीर की दुआ से ही बादशाह अकबर को सलीम जैसा होनहार बेटा प्राप्त हुआ था।

(3) फतेहपुर सीकरी के महल- इस ऐतिहासिक स्थान में पंचमहल, बीरबल का महल और रानी जोधाबाई का महल आदि कई शानदार इमारतें हैं। पंचमहल में पाँच मंजिलें इस तरह बनाई गई हैं कि वे ऊपर की ओर सँकरी तथा नीचे की ओर विस्तृत होती जाती हैं। बीरबल का महल भी बहुत सुंदर है। यह महल उस बीरबल की याद ताजी कराता है, जिसका विनोद अकबर के जीवन का एक अंग बन गया था। जोधाबाई का महल देखते ही हमारे समक्ष भारत के गौरवपूर्ण अतीत का चित्र उपस्थित हो गया।

(4) दीवाने खास और हिरन मीनार- दीवाने खास की सुंदरता ने भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया। इसमें बादशाह अकबर अपने मंत्रियों से सलाह-मशविरा किया करता था। अकबर यहाँ के पूजागृह में सभी धर्मों के आचार्यों और पंडितों को बुलाकर उनकी धर्म चर्चाएँ सुनता था। हमने हिरन मीनार और हाथी दरवाजा भी देखा। हाथी दरवाजा यहाँ के किले में प्रवेश करते ही दिखाई पड़ता है। सचमुच, द्वार पर बने हाथी अकबर की महत्ता के प्रतीक जैसे लगते हैं।

इस प्रकार फतेहपुर सीकरी की भव्यता के दर्शन करने पर हमारी उत्सुकता शांत हुई। भारतीय इतिहास में बादशाह अकबर हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक हैं। फतेहपुर सीकरी की कला में भी हमने उसी एकता के दर्शन किए।

22. परीक्षा भवन,
2103/50, ओसियां,
नई दिल्ली – 1110030
दिनांक : XX जुलाई XXXX
प्रिय सखी ममता,
सस्नेह।

आज बहुत दिनों बाद तुम्हारा पत्र मिला। तुम कुशल पूर्वक हो यह जानकर बड़ी खुशी हुई। साथ में यह भी मालूम हुआ कि अगले सप्ताह से तुम्हारी डेढ़ महीने की गर्मियों की छुट्टियां शुरू होने वाली है। ममता अगर तुम्हारा इन गर्मी की छुट्टियों में कुछ और जरूरी

प्रोग्राम ना हो, तो तुम मेरे घर आ जाओ। मुझे तुम्हारे आने से बहुत खुशी होगी।
दिल्ली में घूमने लायक कई सारी प्रसिद्ध ऐतिहासिक जगह है जैसे लाल किला, लोटस टेंपल, कुतुब मीनार, इंडिया गेट आदि। शायद तुमने ये जगहें देखी भी नहीं है। मैं तुम्हें इन सभी जगहों पर घुमाने ले जाऊंगी। इसके अलावा दिल्ली में "शहीद स्मारक स्थल" भी देखने लायक जगह है। जहाँ हमारे देश के सर्वोच्च परमवीर चक्र से सम्मानित माँ भारती के अमर सपूतों की मूर्तियाँ लगी हुई हैं। हम वहाँ जाकर उन वीरों के दर्शन करेंगे और उनसे देशभक्ति की प्रेरणा लेंगे।
इसके अलावा भी हम दिल्ली में कुछ प्रमुख बाजारों, कुछ प्रसिद्ध मॉलों में घूमने जाएंगे। खूब खाएंगे -पिएंगे और मौज मस्ती करेंगे। पूरी गर्मियों की छुट्टियाँ मजे से गुजारेंगे। इसीलिए तुम अवश्य आना और हां मेरी मम्मी भी तुम्हें यहां बुलाने का आग्रह कर रही है।
ममता तुम पत्र मिलते ही मुझे पत्र का उत्तर देना और साथ में यह भी बताना कि तुम किस दिन आओगी। ताकि मैं तुम्हें लेने स्टेशन आ सकूं। मैं तुम्हारे साथ समय बिताने के लिए काफी उत्साहित हूँ। इसीलिए तुम अवश्य आना।
तुम्हारी सखी
क.ख.ग

अथवा

525/6, रामनगर,
हल्द्वानी, बीकानेर (राजस्थान) – 12545
प्रिय दीदी,
सादर प्रणाम।
हम सब यहां पर कुशल मंगल से हैं। आप कैसी हैं? बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं आया। इसलिए आपके कुशल समाचार हमें प्राप्त नहीं हुए। जिस कारण घर के सभी लोग चिंतित हैं।
घर के सभी हाल-चाल ठीक हैं। सभी परिजन स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं।
दीदी आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस साल के स्कूल के वार्षिकोत्सव में हुई निबंध प्रतियोगिता में मैंने प्रथम स्थान हासिल किया और छोटे भैय्या विजय ने दौड़ प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त किया।
दीदी अब मेरी परीक्षाएं नजदीक आ रही है। इसलिए मैं खूब मन लगाकर पढ़ रही हूँ। माताजी और पिताजी ठीक हैं। दादी के घुटनों में दर्द है लेकिन फिर भी वह दादा जी के साथ रोज सुबह सैर सपाटा को निकल जाती हैं।
दीदी अब मैं पत्र समाप्त करती हूँ लेकिन पत्र मिलते ही आप उत्तर तुरंत दीजिए। जिससे हमारी चिंता दूर हो जाएगी। घर के सभी बड़ों की तरफ से आपको आशीर्वाद और छोटों की तरफ से आपको प्यार।
आपकी छोटी बहन
कल्पना

23.

जोधपुर शहर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला
नेशलन हैण्डलूम
दिनांक: 10 दिसम्बर 20XX से 25 जनवरी 20XX तक
समय प्रात: 10 बजे से 9 रात्रि बजे तक
स्थान: रावण चबूतरा स्टेडियम, जोधपुर
10% की छूट के साथ
{हथकरघा एवं हस्तशिल्प के विविध आकर्षक उत्पाद}
आयोजक
उद्योग निदेशालय, राजस्थान जोधपुर
विकास आयुक्त (हथकरघा) भारत सरकार

अथवा

कुष्ठ रोग
का पूर्ण उपचार
समीप के चिकित्सालय अथवा कुष्ठाश्रम में जाइए,
दी गई दवाओं (गोलियों) का नियमित सेवन कीजिए,
नि:शुल्क उपचार का लाभ उठाइए।
रोग के अभिशाप से मुक्ति पाइए।
कुष्ठ रोग को मिटाना है, तो सही इलाज कराना है।
-कुष्ठरोग उन्मूलन अभियान
आयुष मन्त्रालय, भारत सरकार